## यच्क्ञलमपि जलदे। वद्यभतामिति सकललोकस्य । नित्यं प्रसारितकरे। मित्रो ४पि न वीत्तित्ं शक्यः ॥ २५७२ ॥

Die Wolke wird, obgleich sie nur Wasser spendet, der Liebling der ganzen Welt; selbst den Freund (die Sonne) kann man nicht ansehen, wenn er (sie) beständig die Hand ausstreckt (Strahlen entsendet).

यङ्गोव्यते त्रणमपि प्रथितं मनुष्यैर्विज्ञानविक्रमयशोभिरभग्रमानम्।

तन्नाम जीवितमिक् प्रवर्ति तज्जाः काका अपि जीवित चिरं च बलिं च भुङ्के ॥ ५५७३॥

Wenn Menschen auch nur ein ganz kurzes Leben leben, das aber ob der Kenntnisse, des Heldenmuthes und des Ruhmes weit gepriesen wird und bei dem die Ehre nicht leidet, so nennen Kenner der Sache dieses ein wahres Leben: auch eine Krähe lebt lange und verzehrt die hingeworfene Gabe.

यङ्जीव्यते यशोधैर्यमिहतैस्तच जीवितम्।

वितं कवलयन्कंचिच्चिरं जीवित वायमः॥ ५५७८॥

Das Leben ist ein wahres, das berühmte und muthige Männer leben: auch eine Krähe, die eine hingeworfene Gabe verschlingt, lebt lange.

यज्ञाध्ययनदानानि v. l. von Spruch 416.

यं च पन्यानमाऋम्य प्रयाति मनुजेश्वरः।

तेनेश्वरानुपातेन प्रया पाति मङ्गाजनः ॥ ५५७५ ॥

Welchen Weg der Fürst betritt und geht, auf dem Wege geht der grosse Haufe, indem er dem Fürsten auf dem Fusse folgt.

यत एवागतो दे। षस्तत एव निवर्तते।

म्रियाद्रियस्य विस्पेरिशातिः स्याद्यिना धुवम् ॥ ५५७६ ॥

Wodurch ein Schade kam, dadurch wird er auch wieder gehoben: die Blasen eines am Feuer Verbrannten werden sicherlich durch Feuer geheilt.

यतः सदैन्यं s. Spruch 418.

यत्कापठे गर्लं विराज्ञतितरं। मैाली च मन्दाकिनी यस्याङ्के गिरिजाननं किटतटे शार्द्धलचर्माम्बरम्। यन्माया कि रूणिंद्ध विश्वमिखलं पायात्स वः शंकरे।

जम्बूवङ्गलविन्दु वङ्गलजवङ्गम्बालवङ्गालव**त् ॥ ५**५७७ ॥

2272) Pankar. II, 73. a. पटकञ्जलम् unsere Aenderung für पटकृत् जलम्.

2273) HIT. II, 41. ed. Calc. 1830 S. 188. ed. Rode. 161. Çârăg. Paddh. Pańśat. I, 29. Vikramaś. 2. a. जीवित. b. विज्ञात, ऋभड्यमानम्, शीर्यविभवाद्गुणीः (॰ विभवार्यगुणीः) समितम् st. विक्रमयशीभिरभग्रमानम् Pańśat. Vikr. c. तत्तेषु (तत्तस्य) जीवितफलं प्र॰; सन्तः st. तड्जाः. d. चिराय st. चिरं च, चिरं व-

लिमेन st.चिरं च बलिं च. Vgl.den folgenden Spruch und या नात्मज्ञे.

2274) Vikramak. 3. b. Vielleicht ist मिक्-तं zu lesen. c. कीचिच् unsere Aenderung für किंचिच्.

2275) R. 5,81,22. c. ईश्वरानुपातेन unsere Aenderung für ईश्वरनिपातेन.

2276) Dṛṣнṛลntaç. 66 bei Навв. 223.

2277) Gunaratna 2 bei Haeb. 523. Çârñg.